BRDU International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN : 2455-278X
(A peer reviewed and refereed Journal)
Vol.10, Issue.III, March 2024, Pc : BRDU-2403008

सत्यवीर नाहड़िया के हरियाणवी लोक साहित्य में जीवन दर्शन

मनीषा कुमारी, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर।

हरियाणा हिंदी भाषा क्षेत्र का सीमांत प्रदेश होने के नाते ऐतिहासिक दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है । हरियाणवी बोली बेहद समृद्ध, प्रभावशाली एवं प्राचीन है। अलग–अलग काल खंडों में हरियाणवी रचना धर्मिता के अनेक रचनाकारों ने अपनी श्रेष्ठ रचनाएं दी हैं। इन्हीं रचनाकारों में एक युवा रचनाकार हैं सत्यवीर नाहड़िया। हरियाणवी लोक साहित्य सृजन में उनकी पैनी दृष्टि तथा रचनात्मक सृजनशीलता का समन्वय नजर आता है। इनकी लोक रचनाओं में हरियाणवी संस्कृति का हर पहलू जीवंत हो उठता है। इनकी रचनाओं में कहीं गिरधर जैसा पैनापन है तो कहीं कबीर जैसी शंखनाद करती चेतावनी ग्राम्य जीवन की बदलती जीवन शैली जो आधुनिकता की भेंट चढ़ गई, का इन्होंने अपनी रचना 'नाहड़िया की कुंडलियाँ' में सटीक चित्रण किया है।

प्यारा था रै गाम यो, पर इब रावणराज।
भाग्गण लाग्ये छोड़ कै, भाज सकै तै भाज।
भाज सकै तै भाज, काज सभ उलटे होर्‌ये।
घर–घर इबतै बीज, बिघन के न्यारे बोर्‌ये।
नाहड़िया कबिराय, गाम इब होग्या न्यारा।
लोकलाज ग्ये भूल, गाम था सभतै प्यारा।।

नाहड़िया की रचनाओं में हरियाणवी लोक संस्कृति की गहरी छाप नजर आती है और यह लोकमन के उन सभी मनोभावों को हुबहू चित्रित करती है। इनकी रचनाओं में एक ओर जहां समय के सवालों से संवाद हैं, प्रेरक रचना धर्मिता है वहीं इनमें ठेठ हरियाणवी बोली के चलते माटी की सोंधी महक है। इनकी रचनाओं में लोक संस्कृति के गहरे शब्द चित्र हैं साथ में सामाजिक कुरीतियों, विसंगतियों पर गहरी कटाक्ष भी किए हैं। इनकी रचनाओं में हरियाणवी लोक संस्कृति का ऐसा कोई आयाम बाकी नहीं जो वर्णित न हुआ हो।

हरियाणवी लोक जीवन के रीति–रिवाज, पर्व–उत्सव, खान–पान, गीत–संगीत, खेती–बाड़ी, पशु–पक्षी और प्रकृति के विभिन्न रूपों का भावपूर्ण चित्रण हुआ है। हिंदी भाषा के बारे में उन्होंने लिखा है–

हिंदी म्हारी आन सै, हिंदी म्हारी स्यान।
दिखे साल म्हं एक दिन, रह हिंदी का ध्यान।
रह हिंदी का ध्यान, मान ना करते भाई।
आच्छी लाग्गै रोज, घणी क्यूं काकी–ताई।
नाहड़िया कबिराय, मान ल्यो मस्तक बिंदी।
अपणाओ दिन–रात, मात सै अपणी हिंदी ।।

नाहड़िया के साहित्य में समाज में घटित हर घटना प्रतिबिंबित हो उठती है। राजनीति के घिनौने रूप, समाज की विकृत मानसिकता, पाखंड, बुरी करतूतें, गुंडो के धन कमाने के हथकंड़े, चरमराती व्यवस्थाएं, रिश्ते–नाते, भाई–चारा, खेल–कूद, तीज–त्यौहार, लोक परंपराएं, देश–प्रेम, शहीदों का बलिदान, झोपड़ी और महल की बातें, मन की ममता, बेटियों की पीड़ा, ऋतुओं के सतरंगी भावपूर्ण रंगों का चित्रण आम जन तक पहुंचाया है। हरियाणवी दोहा सतसई 'बख़त–बख़त की बात' में बेटियों के मान सम्मान का भावपूर्ण चित्रण किया है।

बेट्टी कुल की आन सै, बेट्टी कुल की स्यान।
लोकलाज का ताज वा, जग का स्वाभीमान।।

नाहड़िया के काव्य में अध्यात्म, नैतिकता, सांप्रदायिक सद्भाव, दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, महंगाई, नारी सम्मान, राष्ट्रभाषा, भाई–चारा, किसान मजदूर की दुर्दशा, शौर्य गाथा, जल का महत्व, वृक्षारोपण, प्रकृति प्रेम जैसे ज्वलंत विषयों का समावेश भी है। हरियाणवी लोक भाषा को अपने विचारों में प्रस्तुत करना उनकी काव्य साधना का प्रमाण है और साथ में शंखनाद है मानव मात्र के साथ जल, जंगल व जमीन को बचाने का, जो सबके लिए हितकारी है। प्रकृति को बचाने का आह्वान 'पंच तत्व की पीर' में इस प्रकार किया है –

पंच तत्व को पूजना, कुदरत पूजा खास।
सबका ही कल्याण है, सबको आए रास।।

आमजन के लोकमन को नाहड़िया जी ने तीज–त्योहारों, होली–फाल्गुन के गीतों के माध्यम से गहराई से छुआ है। 'हरियाणा के रंग' नामक कृति में इसे सहज ही इस प्रकार पिरोया है कि लोकमन का कोई पहलू इसमें अछूता नहीं रहा है।

कितै नगारे गूँजते, कितै बाजते ढोल।
झांझ–मजीरे साथ म्हं, मिट्ठे होळी बोल।

मिट्ठे होळी बोल, नाचते रळ–मिळ सारे।

नर–नारी अर बाल, ढोल पै कितै नगारे।।

पीढ़ीयों के अनुभव जो जीवन दर्शन है, का नाहड़िया जी की कृति 'बख़त–बख़त की बात' में युवाओं के लिए संदेश दिया गया है ताकि भटकती युवा पीढ़ी को सही राह दिखा पाए जो आज की महती आवश्यकता है।

बख़त बड़ा बलवान सै, बड़ी बख़त की म्हेर।

टाले तै टलता नहीं, कदे बख़त का फेर।।

नाहड़िया जी के लोक साहित्य में स्पष्टतः लोक जीवन, लोकमन, लोक संस्कृति संबंधी सभी भावों को चित्रित किया गया है। नाहड़िया जी का लेखन हरियाणवी लोक साहित्य के लिए एक मजबूत स्तंभ है, इसमें कोई दोराय नहीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. नाहड़िया की कुंडलियाँ, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–29
2. नाहड़िया की कुंडलियाँ, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–35
3. बख़त–बख़त की बात, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–27
4. पंचतत्व की पीर, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–19
5. हरियाणा के रंग, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–104
6. बख़त–बख़त की बात, सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–64